सामाजिक तनाव

SOCIAL
TENSION
Marshall
TAMA

"सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारणों से जो संघर्ष पैदा होता है उसे सामाजिक तनाव कहते है"

यूरोप में सामाजिक तनाव के कारण

औद्योगिक क्रांति

पूंजीवादी व्यवस्था

सामाजिक आंदोलन

पूंजीवादी व्यवस्था

आमिर-गरीब के बीच के अंतर को कम करना

समाजवाद

शाब्दिक प्रयोग-
कार्ल मार्क्स-
फ्रेडरिक ऐन्जेल्स
:कम्युनिस्ट मेनिफ़ेस्टो

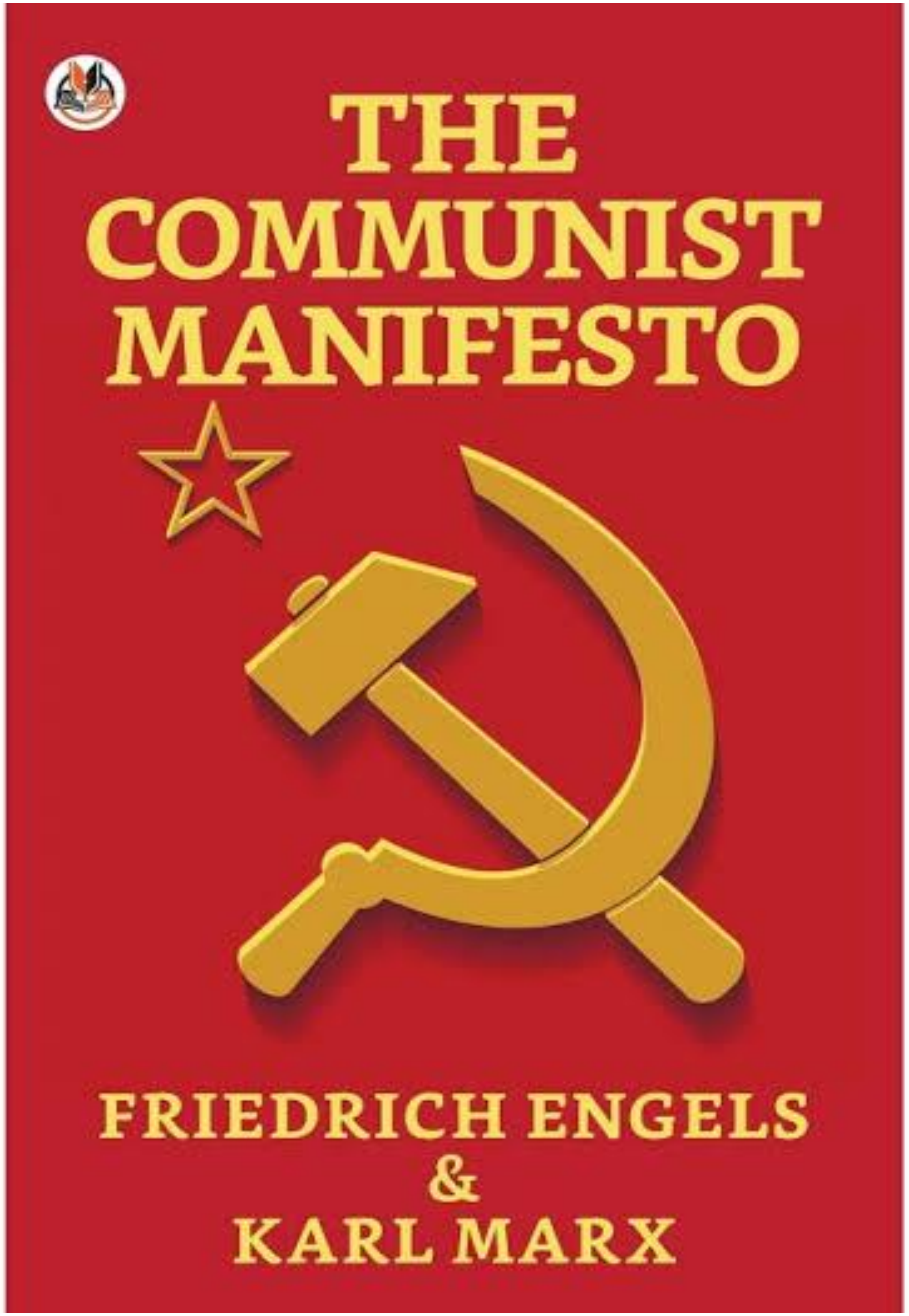

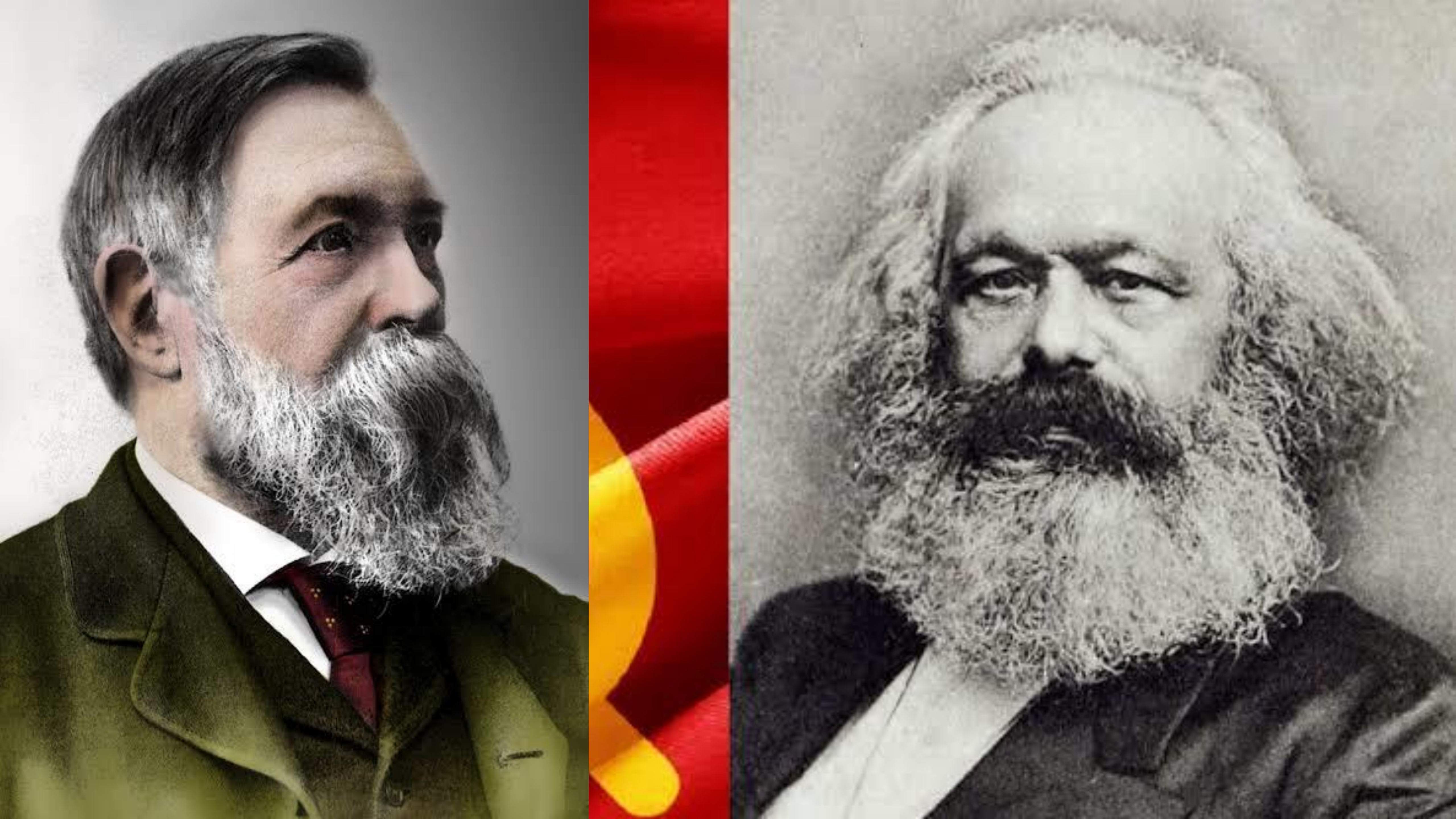

उद्देश्य: समाज में आर्थिक-सामाजिक समानता स्थापित करना

परिभाषा

जे पी नारायण: “एक ऐसा वर्गविहीन समाज जिसमे सब श्रम जीवी हैं। सारी संपत्ति सार्वजनिक और राष्ट्रीय होगी।

सेलर्स: समाजवाद एक ऐसी जनतान्त्रिक विचारधारा है जिसका उद्देश्य समाज में एक ऐसा आर्थिक संगठन स्थापित करना है जो की व्यक्ति को अधिकतम नये और स्वाधीनता प्रदान करे

विशेषताएँ

व्यक्तिवाद का विरोध व्यक्ति की अपेक्षा समाज को महत्व

व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग

पूंजीवाद और खुली प्रतियोगिता का विरोध

उत्पादन का लक्ष्य

समाज की जरूरतों की पूर्ति के लिए

उत्पादन और वितरण के साधनों पर राज्य का नियंत्रण

निजी संपत्ति का सीमित अधिकार

आर्थिक और लैंगिक समानता का समर्थन केंद्र को ज्यादा शक्तियां देने का समर्थन

प्रमुख समाजवादी प्रवर्तक

रॉबर्ट ओवन (इंग्लैंड),

सेंट साइमन (फ़्रांस)

लूइस ब्लॉक (फ़्रांस)

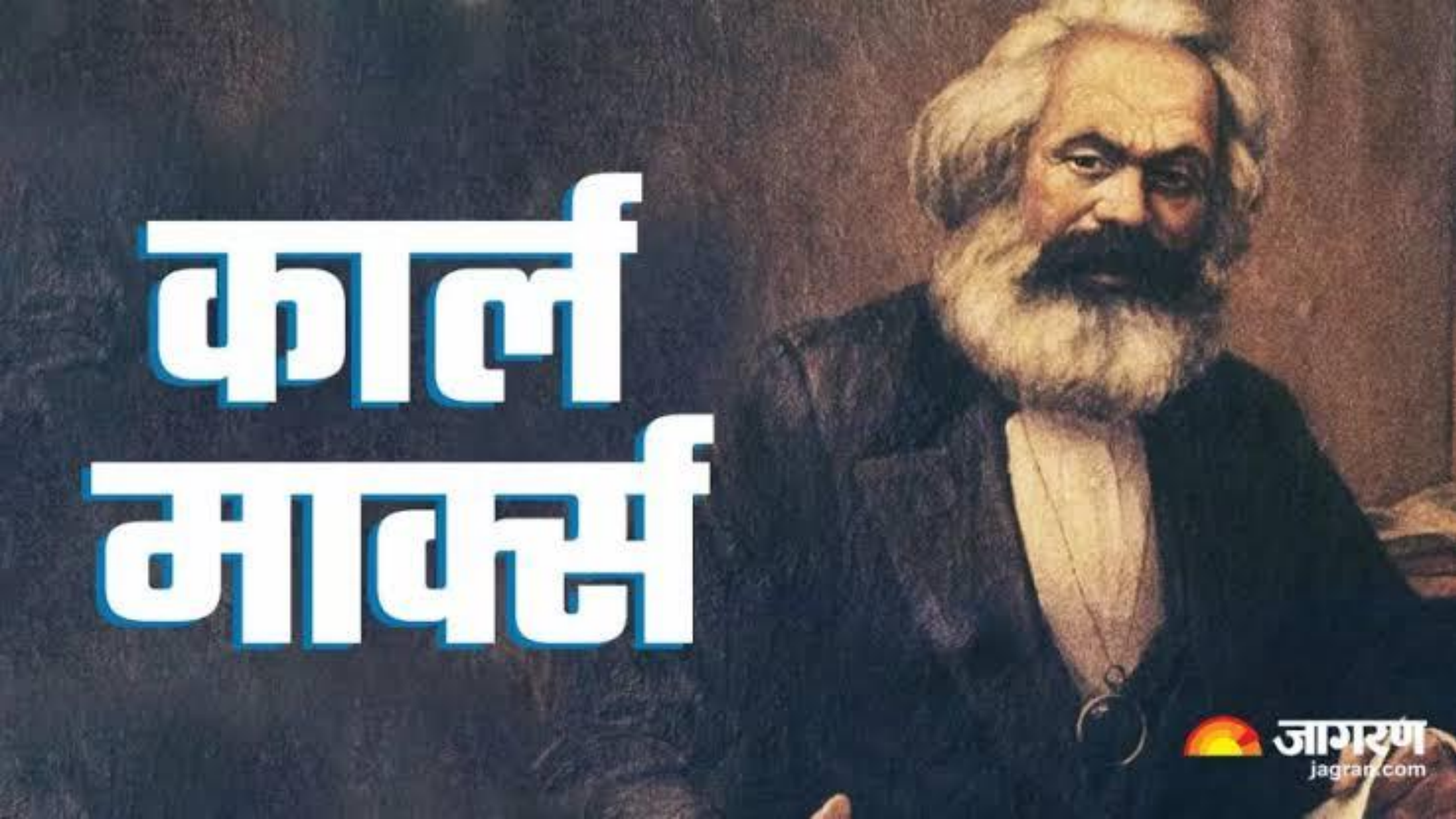
कार्ल
मार्क्स
जागरण
jagran.com

जर्मनी का विद्वान

5 मई 1818 जन्म

प्रोटेस्टेंट धर्म को

स्वीकार किया

मार्क्स की रचना दास केपिटल में सिद्धांतों का वर्णन

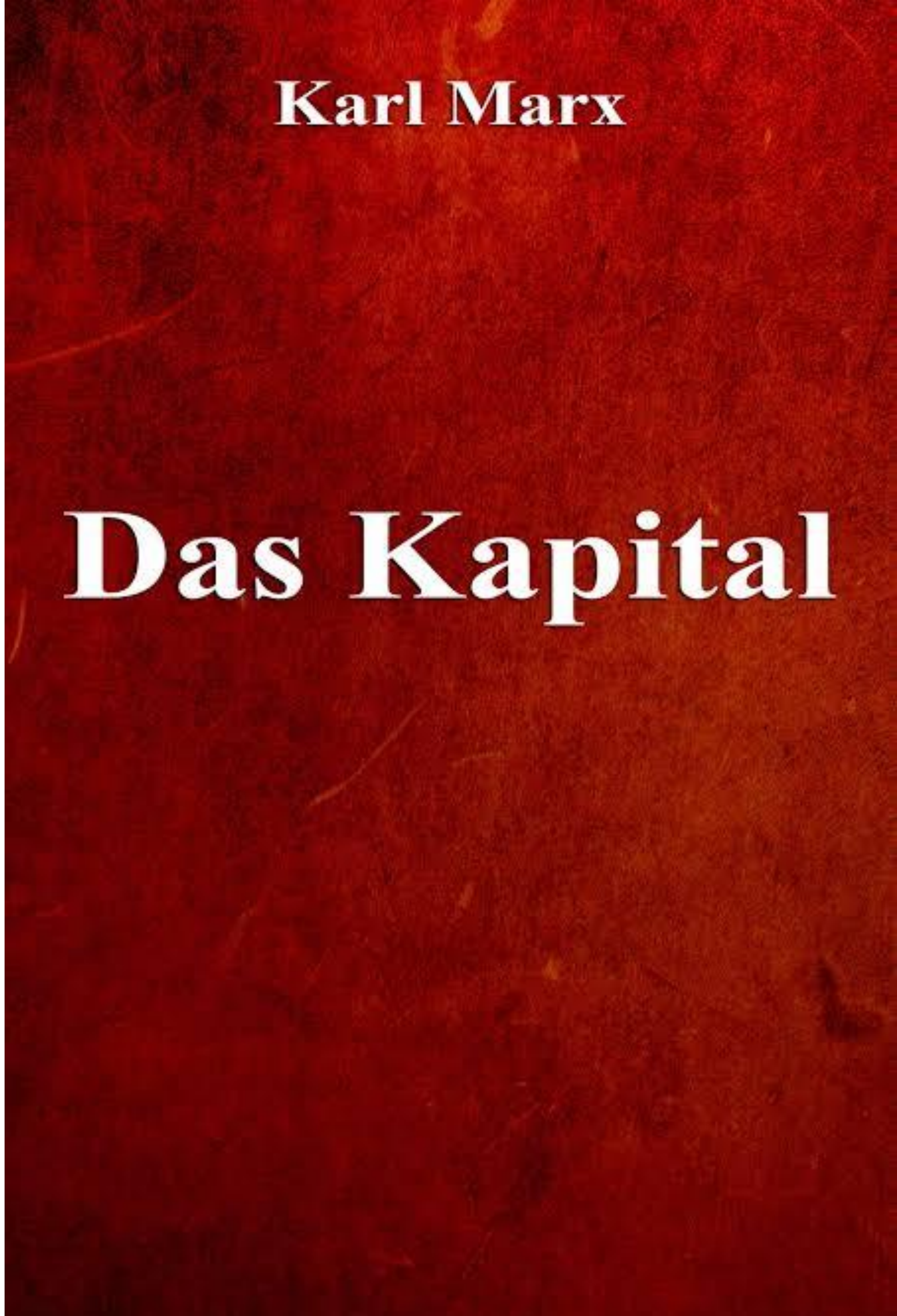

द्वन्दात्मक
भौतिकवाद

कार्ल मार्क्स द्वन्दआत्मक भौतिकवाद सिद्धांत

प्रत्येक समाज में दो विरोधी आर्थिक शक्तियां होती हैं

THEORY OF HISTORICAL MATERIALISM
ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत
कार्ल मार्क्स

इतिहास में जो भी परिवर्तन हुए हैं उनका कारण भौतिक है

KARL MARX
कार्ल मार्क्स
वर्ग संघर्ष के
सिद्धांत

प्रत्येक काल में दो विरोधी वर्ग होते हैं

किसान-जमींदार

मजदूर-पूंजीपति

Have
(बुरजुआ वर्ग)
&
Have Not
(सर्वहारा वर्ग)

अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत

मजदूर को दी गई मजदूरी और वस्तु के विक्रय के बीच का अंतर अतिरिक्त मूल्य कहलाता है

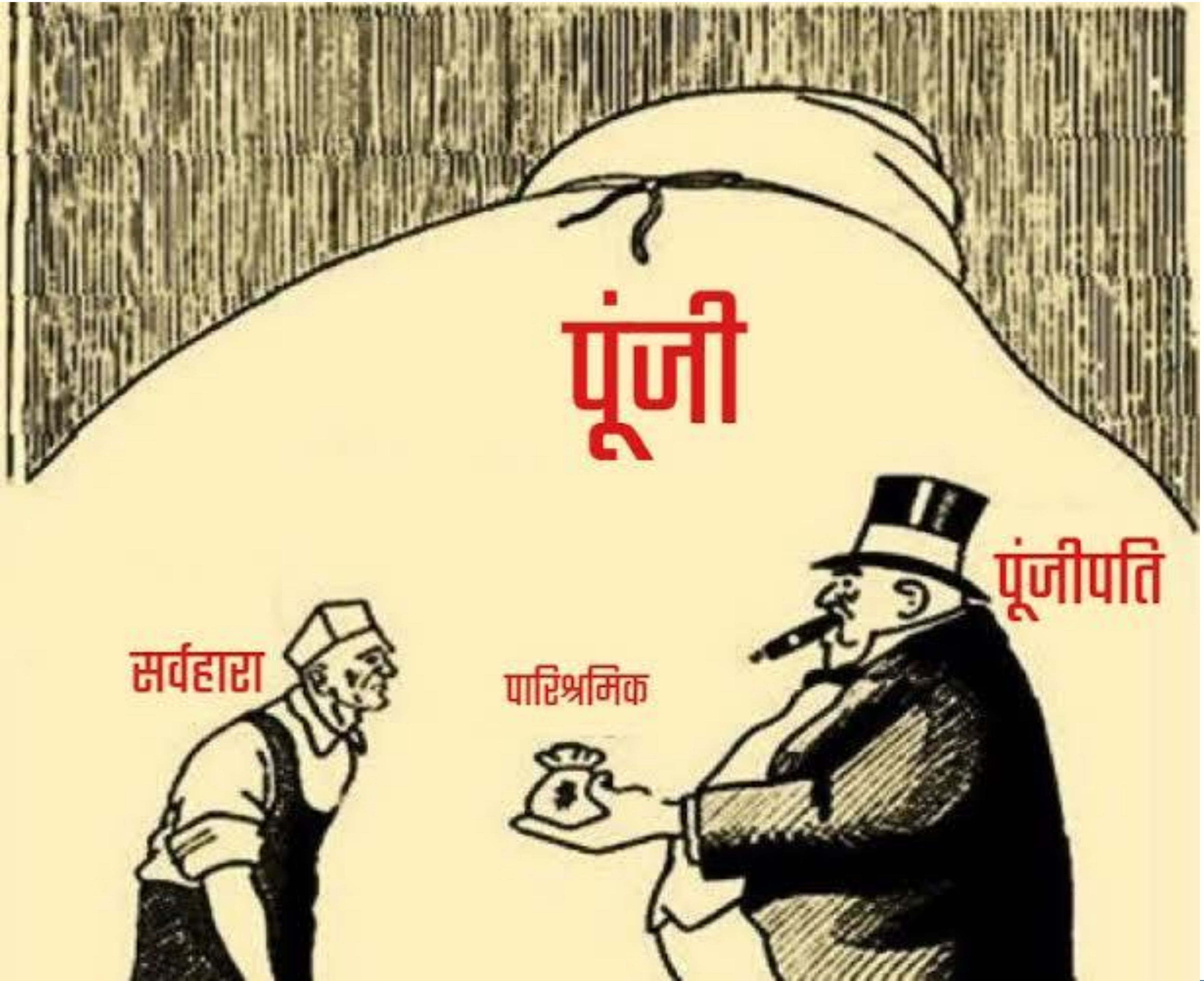
पूंजी
पूंजीपति
सर्वहारा
पारिश्रमिक

पूंजीवाद का स्वतः नाश

सामाजिक क्रांति और सर्वहारा की तानाशाही

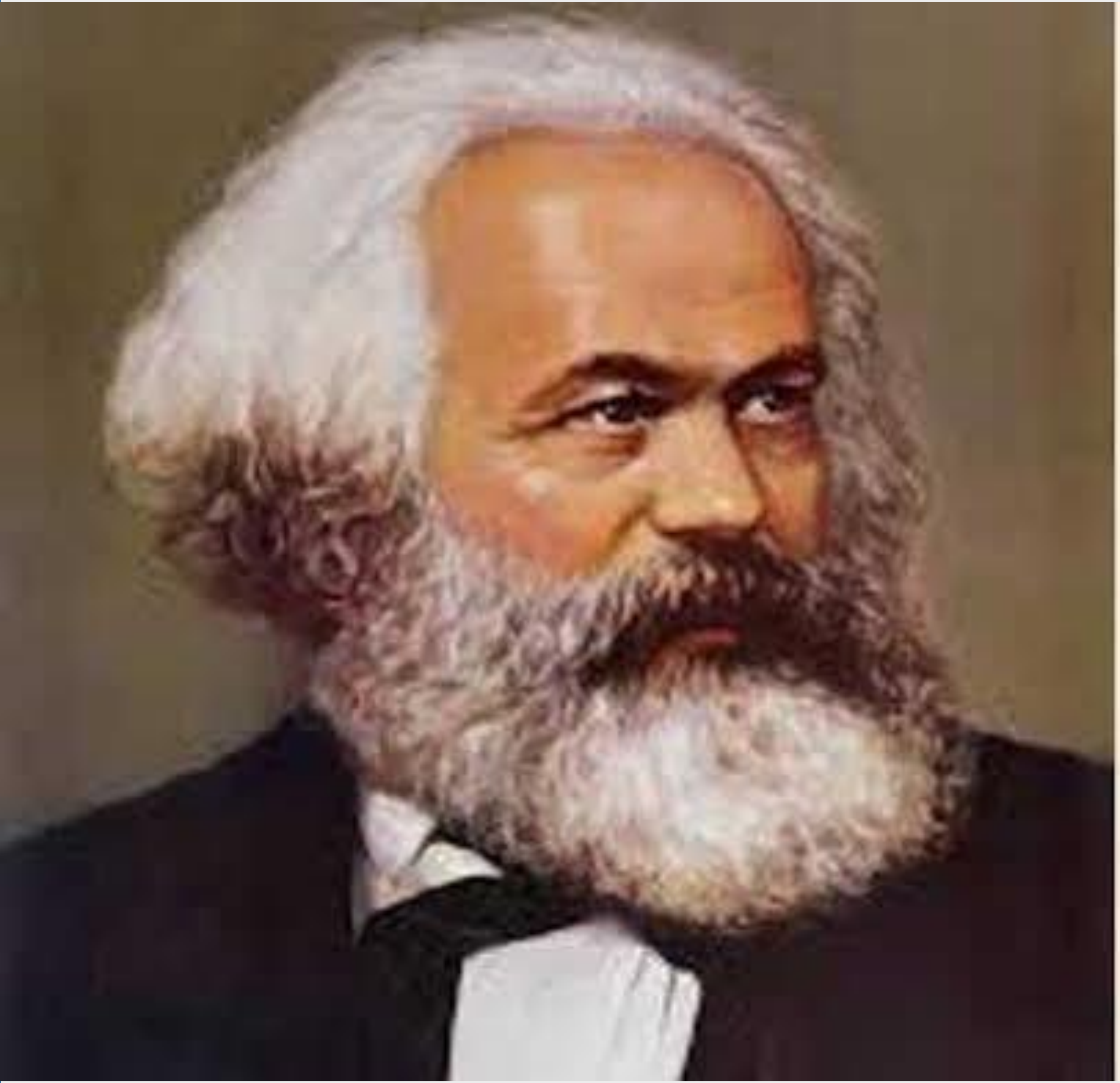

दुनियाभर के मजदूरों
एकजुट हो जाओ,
तुम्हारे पास खोने को
कुछ भी नहीं है, सिवाये
अपनी जंजीरों के।

–कार्ल मार्क्स

वर्गविहीन और राजयविहीन समाज